विषयानुक्रमणिका

अध्याय एक

समकालीन हिन्दी उपन्यास और स्त्री विमर्श: नयी दिशाएँ एवं उपलब्धियाँ

1.1 समकालीनता **1 - 4**

1.1.1 समकालीनता : अर्थ एवं स्वरूप

1.1.2 समकालीनता : परिभाषा

1.2 समकालीन महिला उपन्यास लेखन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ **4 - 14**

1.2.1 भूमण्डलीकरण (वैश्वीकरण) एवं पर्यावरण सजगता

1.2.2 भूमण्डलीकरण और आर्थिक उदारीकरण

1.2.3 उपभोक्तावाद का प्रसार

1.2.4 तकनीकी क्रान्ति

1.2.5 मीडिया का प्रभाव

1.2.6 साम्प्रदायिकता

1.2.7 आतंकवाद

1.2.8 दलित विमर्श

1.2.9 स्त्री विमर्श

1.3 महिला उपन्यास लेखन की पृष्ठभूमि - सामान्य परिचय **14 - 19**

1.4 समकालीन महिला उपन्यासकारों की सृजन की अस्मिताएँ **19 - 26**

1.4.1 कृष्णा सोबती

1.4.2 मेहरुन्निसा परवेज़

1.4.3 मृदुला गर्ग

1.4.4 उषा प्रियंवदा

1.4.5 मन्नू भण्डारी

1.4.6 मंजुल भगत

1.4.7 चित्रा मुदगल

1.4.8 राजी सेठ

1.4.9 मैत्रेयी पुष्पा

1.4.10 शशिप्रभा शास्त्री

1.4.11 नासिरा शर्मा

1.4.12 चन्द्रकान्ता

1.5 चन्द्रकान्ता के साहित्यिक अवदान : एक नज़रियाँ 26 - 29

1.5.1 जीवनवृत्त

1.5.2 जन्म तथा परिवार

1.5.3 बचपन

1.6 कृतित्व 29 - 33

1.6.1 साहित्य सृजन का आरम्भ

1.6.2 नियमित लेखन का आरम्भ

1.6.3 कहानी साहित्य

1.6.4 कथा संकलन

1.6.5 उपन्यास साहित्य

1.6.6 कथेतर साहित्य

1.6.7 पुरस्कार एवं सम्मान

1.6.8 अन्य सम्मान

❖ **निष्कर्ष**

अध्याय दो

स्त्री स्वत्व के नए अथ एवं सन्दर्भ

2.1 स्वत्व : स्वरूप एवं अवधारणा 36 - 37

2.2 स्त्री स्वत्व की अवधारणा : परम्परा एवं स्वरूप 38 - 41

2.2.1 स्त्री: व्युत्पत्तिगत अर्थ

2.3 स्त्री स्वत्व का स्वरूप : विभिन्न भारतीय सन्दर्भ में 41 - 48

2.3.1 वैदिक काल में स्त्री

2.3.2 महाकाव्य काल में स्त्री

2.3.3 जैन और बौद्ध काल में स्त्री

2.3.4 मध्ययुगीन काल में स्त्री

2.3.5 आधुनिक काल में स्त्री

2.4 स्त्री स्वत्व के नए सन्दर्भ एवं पाश्चात्य दृष्टि 48 - 54

2.4.1 पश्चिम का स्त्री मुक्ति आन्दोलन

2.4.2 स्त्री मुक्ति आन्दोलन का प्रथम चरण

2.4.3 स्त्री मुक्ति आन्दोलन का दूसरा चरण

2.4.4 स्त्री मुक्ति आन्दोलन से प्रेरक साहित्य

2.5 स्त्री स्वत्व के नए सन्दर्भ एवं भारतीय दृष्टि 54- 63

2.5.1 भारत का स्त्री मुक्ति आन्दोलन

2.5.2 स्त्री मुक्ति आन्दोलन से प्रेरक साहित्य

❖ **निष्कर्ष**

अध्याय तीन

चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप

3.1 चन्द्रकान्ता के उपन्यास : एक अध्ययन **67 - 78**

3.1.1 अर्थान्तर

3.1.2 बाकी सब खैरियत है

3.1.3 ऐलान गली ज़िन्दा है

3.1.4 अंतिम साक्ष्य

3.1.5 यहाँ वितस्ता बहती है

3.1.6 अपने-अपने कोणार्क

3.1.7 कथा सतीसर

3.2 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप **78 - 79**

3.2.1 प्राचीन विचारधारा से प्रभावित स्त्री **79**

3.2.1.1 समर्पित स्त्री

3.2.1.2 कमज़ोर स्त्री

3.2.2 आधुनिक विचारधारा से ओतप्रोत स्त्री **85**

3.2.2.1 डेटिंग एवं लिविंग टुगेथेर में विश्वास करनेवाली स्त्री

3.2.2.2 आत्मनिर्भर स्त्री

3.2.2.3 शिक्षा द्वारा परिवर्तित स्त्री

3.2.2.4 स्वाभिमानी स्त्री

3.2.2.5 ज़िम्मेदार स्त्री

3.2.2.6 विद्रोही स्त्री

3.2.3 पारिवारिक स्नेह सौहार्द को पसन्द करनेवाली स्त्री **93 - 101**

3.2.4 असफल दाम्पत्य जीवन बितानेवाली स्त्री

3.2.5 विवाहपूर्व प्रेम और यौन सम्बन्धों में फँसी स्त्री

3.2.6 विवाहेतर प्रेम में फँसी स्त्री

3.2.7 किशोरावस्था में किए प्रेम में फँसी स्त्री

3.2.8 अनमेल विवाह से त्रस्त स्त्री

3.2.9 शोषण के शिकार बनी स्त्री

3.2.10 अकेलापन से तनावग्रस्त एवं संघर्षभरित उदासीन स्त्री

3.2.11 वृद्धावस्था में स्त्री

3.2.12 पके उम्र में अनब्याही स्त्री

3.2.13 आतंकवास से त्रस्त स्त्री

3.3 स्वभाव विशेष के आधार पर स्त्री स्वत्व के विविध रूप **101 - 107**

3.3.1 साहसी स्त्री

3.3.2 सेवाभावी स्त्री

3.3.3 स्त्री के खिलाफ स्त्री

3.3.4 प्रेमी के इन्तज़ार में स्त्री

3.3.5 विचार और भावना के द्वन्द्व में फँसी स्त्री

3.3.6 दहेज प्रथा से विरोधी स्त्री

❖ **निष्कर्ष**

अध्याय चार

चन्द्रकान्ता के स्त्री पात्र, अस्मिता की तलाश, प्रतिरोध और समस्याएँ

4.1 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में चित्रित प्रमुख स्त्री पात्रों के विविध रूप **112 - 114**

4.1.1 अर्थान्तर **112**

4.1.1.1 कम्मो

4.1.2 बाकी सब खैरियत है **115**

4.1.2.1 पारुल

4.1.3 ऐलान गली ज़िन्दा है **116**

4.1.3.1 अरुन्धती

4.1.3.2 रत्ना

4.1.3.3 दिव्या

4.1.4 अंतिम साक्ष्य **119**

4.1.4.1 बीजी

4.1.4.2 मीना

4.1.5 यहाँ वितस्ता बहती है **121**

4.1.5.1 गौरी

4.1.5.2 गुणी

4.1.6 अपने-अपने कोणार्क **123**

4.1.6.1 कुनी

4.1.7 कथा सतीसर **125**

4.1.7.1 कात्या

4.1.7.2 लल्ली

4.2 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की तलाश: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

4.2.1 अस्मिता: अर्थ एवं स्वरूप **128 - 131**

4.2.2 स्त्री अस्मिता: स्वरूप

4.2.3 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की तलाशv **131**

4.2.3.1 अर्थान्तर

4.2.3.2 बाकी सब खैरियत है

4.2.3.3 ऐलान गली ज़िन्दा है

4.2.3.4 अंतिम साक्ष्य

4.2.3.5 यहाँ वितस्ता बहती है

4.2.3.6 अपने-अपने कोणार्क

4.2.3.7 कथा सतीसर

4.3 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में चित्रित स्त्री स्वत्व की समस्याओं के विवध रूप

4.3.1 पारिवारिक समस्याएँ **140 - 148**

4.3.2 सामाजिक समस्याएँ

4.3.3 आर्थिक समस्याएँ

4.3.4 राजनीतिक और आतंकवाद से जुड़ी समस्याएँ

4.3.5 धार्मिक व साँस्कृतिक समस्याएँ

❖ **निष्कर्ष**

अध्याय पाँच

चन्द्रकान्ता के उपन्यासों की भाषिक संरचना

5.1 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में शिल्प विधान **153 - 156**

5.1.1 शिल्प : अर्थ

5.1.2 शिल्प : परिभाषा

5.1.3 शिल्प : स्वरूप

5.2 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में शिल्पागत वैशिष्ट्य **156 - 159**

5.2.1 कथानक

5.2.2 चरित्र चित्रण **160**

5.2.2.1 प्रमुख एवं गौण पात्रों का परिचय एवं महत्व

5.2.3 कथोपकथन/ संवाद **162**

5.2.3.1 पात्रानुकूल संवाद

5.2.3.2 भावानुकूल संवाद

5.2.3.3 दीर्घकार्य संवाद

5.2.3.4 संक्षिप्त संवाद

5.2.4 देशकाल वातावरण **168**

5.2.5 भाषा शैली **170**

5.2.5.1 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में प्रयुक्त शैलीगत वैशिष्ट्य

5.2.5.1.1 वर्णनात्मक शैली

5.2.5.1.2 मनोविश्लेषणात्मक शैली

5.2.5.1.3 आत्मकथात्मक शैली

5.2.5.1.4 प्रतीकात्मक शैली

5.2.5.1.5 पत्रात्मक शैली

5.2.5.1.6 आँचलिक शैली

5.2.5.1.7 कोष्ठक शैली

5.2.5.1.8 मिश्रित शैली

5.2.5.1.9 पूर्वदीप्ति शैली

5.2.5.1.10 लोककथा शैली

5.2.5.1.11 चित्रात्मक शैली

5.2.6 उद्देश्य **186**

5.2.7 शीर्षक की सार्थकता **187**

5.3 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में भाषागत वैशिष्ट्य **189 - 202**

5.3.1 तत्सम शब्द

5.3.2 तद्भव शब्द

5.3.3 देशज शब्द या आँचलिक शब्द

5.3.4 विदेशी शब्द

5.3.4.1 अरबी-फारज़ी शब्द

5.3.5 अंग्रेज़ी शब्द

5.3.6 अंग्रेज़ी वाक्यों का प्रयोग

5.3.7 कश्मीरी शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग

5.3.8 संस्कृत श्लोकों एवं सूक्तियों का प्रयोग

5.3.9 मुहावरों का प्रयोग

5.3.10 कहावतों और लोकोक्तियों का प्रयोग

5.3.11 कविताओं का प्रयोग

5.3.12 बिम्बों एवं प्रतीकों का प्रयोग

5.3.13 अलंकारों का प्रयोग

निष्कर्ष

6. उपसंहार **214 - 225**

❖ **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची** **226 - 243**

❖ **परिशिष्ट**